# आधुनिक भारत के वर्तमान परिदृश्य में नैतिकता का ह्रास : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

**कविता रुस्तगी**

**शोधार्थी**

**श्री वेंकटेश्वरा यूनिवर्सिटी, गजरौला, अमरोहा, उत्तर प्रदेश**

**डॉ. नाहिद परवीन**

**शोध निर्देशिका**

**श्री वेंकटेश्वरा यूनिवर्सिटी, गजरौला, अमरोहा, उत्तर प्रदेश**

## सारांश

यह शोध पत्र आधुनिक भारत के बदलते सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश में नैतिकता के ह्रास के कारणों और उनके वर्तमान सामाज पर प्रभाव का आकलन करता है। नैतिकता भारतीय समाज का एक अभिन्न अंग रही है। शिष्टाचार, सभ्य संवाद, धार्मिक सहिष्णुता, परोपकार की भावना एवं निःस्वार्थ सेवा भारतीय संस्कृति के मूल तत्व रहे हैं। पिछले कुछ दशकों में भारत ने औद्योगिक, तकनीकी, यातायात और दूरसंचार हर क्षेत्र में तेजी से तरक्की की है। 20वीं सदी का 'आधुनिक भारत' आज 21वीं सदी में उत्तर आधुनिकता के युग में प्रवेश कर गया है। भारत के हर क्षेत्र (नगर, कस्बा या गाँव) पर पाश्चात्य संस्कृति और आधुनिकीकरण का प्रभाव तेजी से बढ़ रहा है, जिसके परिणामस्वरूप भारतीय समाज की पारंपरिक प्रथाएँ तथा नैतिक मूल्य या तो गायब होते जा रहे हैं या उन्हें लोगों द्वारा नए रूप में प्रतिस्थापित किया जा रहा है। आधुनिक भारत के बदलते सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश में नैतिकता का ह्रास एक ज्वलंत समस्या बनती जा रही है। अतः इस विषय पर गहन अध्ययन करने के लिए प्राथमिक आंकड़ों और सहायक आंकड़ों का संकलन और समीक्षा करके समकालीन भारतीय समाज में नैतिकता के पतन के कारण, प्रभाव, रूप और समाधान को जानने का प्रयास किया गया है, ताकि समाज में नैतिक मूल्यों के उत्थान एवं पुनरुद्धार में मदद मिल सके और सामाजिक जीवन को अधिकाधिक नैतिकतापूर्ण एवं सुखप्रद बनाया जा सके।

**शब्द संकेत** : आधुनिक भारत, नैतिकता, समाज, संस्कृति, परिवेश, परिवर्तन।

## प्रस्तावना

"एथिक्स" शब्द लैटिन शब्द "एथोस" से लिया गया है जिसका हिंदी में अर्थ नैतिकता है। नैतिकता का अभिप्राय अच्छा चरित्र, अच्छी आदतें, नैतिकतापूर्ण संस्कार, रीति–रिवाज, शिष्टाचार इत्यादि है। नैतिकता एक दार्शनिक अवधारणा है। नैतिकता मानव के अच्छे और सही कार्यों से संबंधित है। नैतिकता एक तर्क संगत विज्ञान है कि मनुष्य को क्या होना चाहिए। नैतिकता के सिद्धांतों को नैतिक मूल्य कहा जाता है जिनका पालन व्यक्ति की स्वतंत्र इच्छा से संबंधित होता है। नैतिकता एक मूल्य है, जो हमेशा, हर क्षण, हर मोड़ पर एवं हर स्थिति में हमें बताता है कि हमारे लिए क्या सही है और क्या नहीं । बच्चों में नैतिक मूल्यों को विकसित करने में परिवार, समाज और शैक्षणिक संस्थाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

सत्यनिष्ठा, सदाचार, संस्कार और सभ्य नैतिक आचरण जैसे गुण मनुष्यों में होना ही सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास की पहली शर्त है। एक व्यक्ति के नैतिक मूल्य उसके चरित्र को परिभाषित करते हैं। हम सभी समाज द्वारा परिभाषित नैतिकता का पालन करते हैं।

आधुनिक भारत ने विज्ञान और तकनीकी में बहुत विकास कर लिया है। तकनीकी विकास ने हमारे जीवन को बहुत सरल, तीव्रगामी और सुविधाजनक बना दिया है। आधुनिक भारत हर क्षेत्र में आत्म निर्भर है। भारत में सुईं–धागे से लेकर चंद्रयान और मंगलयान तक का निर्माण स्वदेशी तकनीक से हो रहा है। हमारी भौतिक समृद्धि में निरंतर वृद्धि हो रही है लेकिन हमारा समाज नैतिकता में लगातार पिछड़ रहा है। आधुनिक भारत के बदलते सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश में हर क्षेत्र में स्वार्थ का भाव हावी होता जा रहा है तथा परमार्थ का भाव गौण हो रहा है।

भारतीय समाज में उच्च प्रौद्योगकीय विकास के बावजूद मानव मूल्यों में तेजी से गिरावट आ रही है। इसके कारण हमारा समाज विभिन्न क्षेत्रों में नैतिक पतन की ओर बढ़ता जा रहा है जैसे कि पारिवारिक, व्यवसायिक, राजनीतिक, शैक्षणिक, प्रौद्योगिक इत्यादि। आज हमारी सबसे प्रमुख आवश्यकता समाज में गिरते हुए नैतिक मूल्यों को बचाने और उन्हें पुनः स्थापित करने की है। आधुनिक भारत के बदलते सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश में नैतिकता का गिरता स्तर एक ज्वलंत मुद्दा है अतः इस विषय पर गहन अध्ययन की आवश्यकता है।

## संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

नैतिकता से सम्बंधित साहित्य में कुछ विचारकों के मत संक्षेप में इस प्रकार हैं –

### ➢ डॉ. के. के. मिश्र –

डॉ. के. के. मिश्र ने अपनी पुस्तक ''आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन'' में लिखा है कि भारतीय समाज में लोगों की 'प्रस्थिति' तथा 'कार्य' में तीव्र परिवर्तन हो रहा है जिसके अनेक कारण हैं – औद्योगीकरण, नगरीकरण, आधुनिकीकरण, पश्चिमीकरण, धर्म निरपेक्षीकरण की प्रक्रियाएँ इत्यादि। पहले लोगों की एक 'प्रस्थिति' हुआ करती थी और उसी के अनुरूप लोग अपना 'कार्य' किया करते थे। लेकिन आज यह स्थिति नहीं रही। संयुक्त परिवार की यह विशेषता थी कि कर्ता की आज्ञा का पालन सभी सदस्य करते थे। व्यक्ति अपने हित की बात बाद में तथा सामूहिक हित के बारे में पहले सोचता था। सभी अपने सामर्थ्य के अनुसार प्रेम–भाव के द्वारा पारिवारिक उद्देश्यों की पूर्ति करते थे लेकिन औद्योगीकरण, नगरीकरण तथा पश्चिमीकरण के प्रभाव के कारण अब सदस्यों का दृष्टिकोण व्यक्तिवादी होता जा रहा है और अब लोग पारिवारिक उद्देश्य को गौण मानकर अपने व्यक्तिगत उद्देश्यों की पूर्ति में अधिक संलग्न हैं। यही कारण है कि पारिवारिक बन्धन शिथिल पड़ रहे हैं और पारिवारिक ढाँचा परिवर्तित हो रहा है।

### ➢ डॉ. देशराज सिरसवाल –

डॉ. देशराज सिरसवाल ने अपने शोध निबन्ध ''भारतीय समाज में नैतिक मूल्यों की आवश्यकता'' में लिखा है कि भारतीय समाज मूल्य प्रधान समाज है। भारतीय संस्कृति में मूल्यों को मनुष्य के सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक जीवन में विशेष स्थान दिया गया है। वर्तमान समय में एक ओर विज्ञान ने जहाँ मनुष्य को सुख सुविधाएँ देने वाले अविष्कारों के ढेर लगा दिए हैं, वहाँ उसके जीवन में एक खोखलापन भी उत्पन्न कर दिया है। मनुष्य ने अपने जीवन में मानव मूल्यों को तिलांजलि दे दी है, मानव जीवन की सार्थकता तभी है जब वह श्रेष्ठ भावनाएँ रखे। नैतिक मूल्य व्यक्ति की सामाजिक विरासत का अंग होते हैं। नैतिक मूल्य व्यक्ति के जीवन के साथ–साथ समाज को भी उत्कृष्टता की तरफ अग्रसर करते हैं।

- **राजकिशोर –**

लेखक और पत्रकार राजकिशोर ने अपनी पुस्तक ''नैतिकता के नए सवाल'' में लिखे निबंध ''नैतिकता के द्वंद्व'' में लिखा है कि आधुनिक समाज में समस्या यह है कि नैतिकता का जो रूप हमें मान्य है, उस पर हम अमल क्यों नहीं कर पाते, हम जानबूझ कर झूठ क्यों बोलते हैं, पड़ोसी की पीठ में छुरा क्यो भोंकते हैं और दूसरों के हितों की लाश पर अपने स्वार्थों का घोड़ा क्यों आगे बढ़ाना चाहते हैं? क्या यह हमारा व्यक्तिगत पतन है या मामला कुछ और दूर तक जाता है? सफलता चूँकि एकमात्र मूल्य हो गई है इसलिए उसके लिए कोई भी कुरबानी कम मानी जा रही है।

- **डॉ. गिरीश्वर मिश्रा –**

डॉ. गिरीश्वर मिश्रा बरकतउल्ला विश्वविद्यालय भोपाल में मनोविज्ञान के प्रोफेसर रहे हैं। अपने एक आलेख ''नैतिक व्यवहार पर सामाजिक–सांस्कृतिक प्रभाव'' में उन्होंने लिखा है कि हाल की घटनाओं जैसे कि युद्ध, भ्रष्टाचार की घटना, आत्महत्या, नशीली दवाओं का उपयोग, यौन संचारित रोगों का उच्च स्तर इत्यादि ने नैतिकता के प्रति हमारी चिंता को बढ़ा दिया है। विशेष रूप से युवाओं में परेशान करने वाली सामाजिक विकृतियाँ खतरनाक होती जा रही हैं। जैसे–जैसे हम 21वीं सदी की ओर बढ़ रहे हैं, भविष्य के कुछ भयानक पहलू याद दिलाते हैं कि मनुष्य आखिर बहुत बुद्धिमान नहीं रहा है। मनुष्य का समकालीन अस्तित्व एक जटिल विरोधाभास प्रस्तुत करता है। संघर्ष जब कई गुणा बढ़ जाता है और विनाशकारी बन जाता है तो शांति, एकता एवं सद्भाव आवश्यक हो जाता है। उत्तर आधुनिक समाजों ने हमारे वर्तमान अस्तित्व में नैतिक आयाम के पुनः प्रवेश को आवश्यक बना दिया है।

- **डॉ. शिवराज कुमार –**

डॉ. शिवराज कुमार ने अपने अध्ययन में स्पष्ट किया है कि मूल्य और नैतिकता किसी भी समाज या राष्ट्र के विकास का सही परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत करते हैं। यह एक राष्ट्र, एक धर्म, एक जलवायु और एक दर्शन की संपत्ति नहीं है, यह इन सभी क्षेत्रों से आगे निकल जाता है इसलिए यह चरित्रता में सार्वभौमिक है और यह दुनिया भर में बिखरे हुए मनुष्यों के कल्याण से संबंधित है। नैतिक गुणों के बिना ज्ञान न केवल समाज के लिए बेकार है बल्कि समाज के लिए विनाशकारी भी है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि एक मूल्य और नैतिक आधारित समाज के लिए किसी प्रकार की ''आध्यात्मिक चिकित्सा'' की आवश्यकता होती है और इस आवश्यकता को शिक्षा के माध्यम से काफी हद तक पूरा किया जा सकता है।

## अनुसंधान समस्या का प्रकथन

प्रस्तुत शोध अध्ययन समकालीन भारतीय समाज में नैतिकता के पतन की चिंताजनक समस्या से संबंधित है। आधुनिक भारत में तेजी से बदलते सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश के साथ नैतिकता के स्तर में गिरावट एक गंभीर चिंता का विषय बनता जा रहा है। यह शोध दिल्ली और गाजियाबाद क्षेत्र में नैतिकता की वर्तमान स्थिति का समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से अध्ययन करने का प्रयास करता है। वर्तमान समय में, भारतीय समाज में नैतिक मूल्यों का क्षरण स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है, जो सामाजिक संरचना और सामूहिक चेतना को प्रभावित कर रहा है। इस शोध का मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि किस प्रकार पाश्चात्य संस्कृति, मीडिया के प्रभाव, शहरीकरण, आधुनिकीकरण, वैश्वीकरण और तकनीकी प्रगति जैसे कारक भारतीय समाज के नैतिक ताने–बाने को प्रभावित कर रहे हैं।

## अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं –

1. वर्तमान भारतीय समाज में नैतिकता की गिरती दशा का अवलोकन तथा उसके कारण और प्रभावों का अध्ययन करना।
2. भारतीय समाज में आधुनिकीकरण एवं सांस्कृतिक संक्रमण से पारिवारिक संरचना और सामाजिक संबंधों में आए परिवर्तनों से हुए नैतिक मूल्यों के ह्रास का अध्ययन करना।
3. समकालीन भारतीय समाज में लोगों द्वारा सोशल मीडिया एवं सोशल साइट्स के अत्यधिक उपयोग तथा कुछ असामाजिक तत्वों द्वारा इनके दुरुपयोग के कारण नैतिकता के स्तर में हो रही गिरावट का अध्ययन करना।
4. आधुनिक भारत के वर्तमान परिवेश में शैक्षणिक क्षेत्र में हो रहे नैतिक मूल्यों के ह्रास का अध्ययन करना।
5. समकालीन भारतीय राजनीति में नैतिकता के निरंतर गिरते स्तर का अध्ययन करना।
6. भौतिकवाद और वैश्वीकरण के कारण आर्थिक और व्यवसायिक क्षेत्र में हो रही नैतिकता के स्तर में गिरावट का अध्ययन करना।
7. समकालीन भारतीय समाज में धर्म का राजनीतिकरण और व्यवसायीकरण होने के कारण नैतिकता के स्तर में हो रही गिरावट का अध्ययन करना।
8. तकनीकी विकास और प्रौद्योगिकी के बढ़ते दुरुपयोग के कारण उत्पन्न हो रही नैतिक चुनौतियों का अध्ययन करना।
9. पर्यावरण से संबंधित नैतिक मूल्यों का पालन ना करने के कारण उत्पन्न हो रही चुनौतियों का अध्ययन करना।
10. समाज में नैतिकता के गिरते स्तर को रोकने के उपाय जानना तथा लोगों को नैतिक मूल्यों के प्रति जागरूक करना।

## अध्ययन की आवश्यकता

नैतिकता के क्षेत्र में शोध एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है क्योंकि नैतिक मूल्य और सिद्धांत समय और संस्कृति के साथ बदलते रहते हैं। नैतिकता पर शोध हमें समाज में नैतिक निर्णयों को बेहतर ढंग से समझने और लागू करने में मदद करता है। आधुनिक भारत के बदलते सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश में नैतिकता का गिरता स्तर एक गंभीर समस्या का रूप ले चुका है। अतः इस समस्या के कारणों और समाधानों का अध्ययन करना अत्यंत आवश्यक है। मेरा प्रस्तुत अध्ययन 21वीं सदी के भारत में नैतिकता की स्थिति को सामने लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकेगा। यह विषय आने वाले समय में भी उतना ही महत्वपूर्ण रहेगा जितना कि आज है। इस विषय पर गहन अध्ययन करके समाज में नैतिक मूल्यों के ह्रास की समस्या का समाधान जानने का प्रयास किया जा सकता है। प्रस्तुत अध्ययन से समाज में नैतिकता का पुनरुत्थान करने में मदद मिल सकती है। यह कहने भर से काम नहीं चलेगा कि समाज में नैतिक पतन हो रहा है। इस समस्या के समाधान के लिए समाज में नैतिक पतन के कारणों, प्रभावों और रूपों का अध्ययन करना आवश्यक है। नैतिकता पर निरंतर विचार–विमर्श और अध्ययन की सदैव आवश्यकता होती है।

## अध्ययन का क्षेत्र

प्रस्तुत शोध पत्र का अध्ययन क्षेत्र दिल्ली एवं गाजियाबाद महानगर है। दिल्ली, आधिकारिक तौर पर भारत राष्ट्र की राजधानी है और एक केंद्र–शासित प्रदेश भी है। गाजियाबाद, भारतीय राज्य उत्तर प्रदेश का एक शहर और दिल्ली एनसीआर का एक हिस्सा है।

## शोध परिकल्पना

शोध परिकल्पना भारतीय समाज के विभिन्न क्षेत्रों में नैतिकता के गिरते स्तर के कारणों और प्रभावों को उजागर करने से संबंधित है। शोध पत्र का शीर्षक ही शोध परिकल्पना और शोध प्रश्न है।

## शोध विधि

प्रस्तुत अनुसंधान में पिछले पाँच दशकों में आधुनिक भारत के बदलते सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश में नैतिकता के गिरते स्तर का अध्ययन और मूल्यांकन करने के लिए गुणात्मक अनुसंधान पद्धति तथा मात्रात्मक अनुसंधान पद्धति दोनों का पालन किया गया है। इस अनुसंधान में प्राथमिक गुणात्मक आँकड़ों के संकलन के लिए साक्षात्कार विधि और प्राथमिक मात्रात्मक आँकड़ों के संकलन के लिए सर्वेक्षण विधि का अनुसरण किया गया है। साक्षात्कार के लिए अर्थ संरचित साक्षात्कार अनुसूची तथा सर्वेक्षण के लिए संरचित प्रश्नावली का उपयोग किया गया है।

सहायक (द्वितीयक) आँकड़े पुस्तक, अखबार, पत्रिका, इंटरनेट इत्यादि के माध्यम से संकलित किए गए हैं। प्रस्तुत अध्ययन में गुणात्मक जानकारी प्राप्त करने के लिए गैर–संभाव्यता प्रतिचयन विधि (Non-probability sampling method) तथा चेन–रेफरल प्रतिचयन विधि (Snowball sampling method) को अपनाया गया है। आजकल लोगों में असुरक्षा की भावना के कारण संवाद करना मुश्किल हो गया है। स्नो–बॉल सैंपलिंग महत्वपूर्ण हो गई है क्योंकि आज के समय में संदर्भों एवं जान पहचान के माध्यम से लोगों से संपर्क करना सुरक्षित और सुगम हो गया है। लोग साक्षात्कार के लिए तैयार हो गए तथा जानकारी साझा करने के इच्छुक थे।

## परिणाम और चर्चा

शोध विषय पर क्षेत्र अध्ययन तथा सहायक आंकड़ों से प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण से निम्नलिखित परिणाम निकले हैं :

- **नैतिकता के ह्रास के कारण और प्रभाव** –

आधुनिक भारतीय समाज में नैतिक मूल्यों के ह्रास में कई कारकों की भूमिका रही है, जिन्होंने भारतीय समाज के हर क्षेत्र को प्रभावित किया है। इन कारणों और प्रभावों को निम्नलिखित बिंदुओं के द्वारा समझा जा सकता है :

### 1. सामाजिक और परिवारिक मूल्यों में परिवर्तन

आधुनिकता पर पश्चिमी प्रभाग ने भारतीय समाज के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित किया है जिसमें व्यक्तिगत, सामाजिक और पारिवारिक नैतिक मान्यताओं में हुए परिवर्तन विशेष रूप से शामिल हैं। समाज और परिवार में नैतिक मूल्यों के ह्रास की समस्या लगातार बढ़ती ही जा रही है। आज अधिकांश लोगों का प्रमुख ध्येय उन्नति करना और दूसरों से आगे बढ़ना है, जिसका एकमात्र मापदंड धन कमाना तथा

दूसरों से प्रतिस्पर्धा में अन्य लोगों से आगे रहना है। जीवन को धन संपति पर केन्द्रित करने वाले व्यक्ति के लिए ईमानदारी, प्रेम, भाईचारे और करुणा का कोई मोल नहीं है। आज धन कमाने और स्वयं को आधुनिक दिखाने में लोग इतने व्यस्त हैं कि अपने बच्चों को नैतिक संस्कार देने का उनके पास वक्त नहीं है।

आधुनिकता के वर्तमान दौर में परिवारों में पालन–पोषण के बदलते रुझान ने भी नैतिक पतन में योगदान दिया है। आज के समय में बच्चों में सहनशक्ति का अभाव हो रहा है। इसका कारण उनमें नैतिक मूल्यों की कमी का होना है। नैतिकता की कमी से बच्चों में अशिष्टता पैदा हो रही है। बच्चों में नैतिकता नहीं होने का एक कारण माता–पिता के पास समय का अभाव होना है। पहले संयुक्त परिवार प्रथा थी, जिसके अन्तर्गत पारिवारिक रिश्तों को अधिक महत्त्व दिया जाता था। बचपन में दादा–दादियों तथा नाना–नानियों द्वारा अच्छी–अच्छी प्रेरणादायक और शिक्षाप्रद कहानियाँ सुनाई जाती थी। छोटे बच्चे का मस्तिष्क कोरे कागज की तरह होता है, जिस प्रकार की शिक्षा एवं संस्कार बच्चों को बचपन में दिये जाते हैं, बच्चे उसी राह पर आगे बढ़ते हैं। वर्तमान में एकल परिवारों का चलन है। सम्मान, सहयोग और संयम के स्त्रोत संयुक्त परिवार अब नहीं होते । परिवारों में बुजुर्गों के प्रति सम्मान घट रहा है। बुजुर्गों को वृद्ध आश्रम भेजने की संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती ही जा रही है। वृद्ध लोगों की अक्सर उपेक्षा की जाती है। बच्चों और युवाओं द्वारा अपने अभिभावकों की बात नहीं मानना और उनसे बात–बात पर बहस करना अब एक सामान्य बात हो गई है। सामाजिक और पारिवारिक मूल्यों में परिवर्तन के कारण पारिवारिक संबंधों में बाध्यता का अनुभव हो रहा है।

## 2. पाश्चात्य संस्कृति का परंपरागत वैवाहिक मूल्यों पर प्रभाव

पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण नैतिक मूल्यों से परिपूर्ण भारतीय संस्कृति के पतन का खतरा बढ़ता जा रहा है और लोगों के जीवन में मनोरंजन, विलासिता और अकर्मण्यता बढ़ रही है। पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव में मनुष्य अपनी संस्कृति से दूर हो रहा है।

हमारी संस्कृति में विवाह को पति–पत्नी का कई जन्मों का अटूट बंधन माना जाता है, परन्तु पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण विवाह को अब अटूट बंधन नहीं माना जाता है। भारतीय समाज में तलाक को बुरा माना जाता है फिर भी आधुनिक भरतीय समाज मे विवाह विच्छेद (तलाक) की दर निरंतर बढ़ती जा रही है। वर्तमान समाज में विवाह एक धार्मिक अनुष्ठान के बजाय अपनी हैसियत दिखाने का समारोह बनता जा रहा है।

आधुनिक भारत में पारम्परिक विवाह के अतिरिक्त कुछ अन्य रिश्ते भी बनने लगे हैं, जैसे कि समलैंगिक सम्बन्ध तथा लिव–इन रिलेशनशिप। समलैंगिक विवाह में समान लिंग के लोग पति–पत्नी के रूप में रहने का निर्णय करते हैं। लिव–इन रिलेशनशिप में स्त्री और पुरुष बिना वैवाहिक बंधन के पति–पत्नी की तरह साथ में रहते हैं। पाश्चात्य संस्कृति के विपरीत हमारी भारतीय संस्कृति में इस प्रकार के संबंधों को अवैध और अनैतिकता पूर्ण माना जाता है।

भारतीय समाज में किसी स्त्री पुरुष को बिना विवाह के साथ रहने की इजाजत नहीं है, फिर भी पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव की वजह से हमारे देश में लगातार इस तरह के रिश्ते बनाए जा रहे हैं, जो कई बार इतने दुखदाई हो जाते हैं कि स्वयं को और पूरे परिवार को बहुत कष्ट पहुंचाते हैं। आज की संस्कार विहीन और खुलेपन की संस्कृति पाश्चात्य संस्कृति का ही प्रभाव है। बड़े–बुजुर्गों की बात न मानने का चलन सा आ गया है। कहीं बचपन से ध्यान न देने के कारण तो कहीं अत्यधिक आजादी देने की वजह से बच्चे मनमानी करते हैं। बच्चे 18 साल के होते ही कहते हैं कि वे अपना भला–बुरा समझ सकते हैं, माता–पिता, भाई–बहन या कोई अन्य उनके निजी जीवन में दखल न दें। एक ओर लड़कियाँ आजादी के सामने सतर्कता को भी भूल रही हैं, तो दूसरी ओर सनकी दरिंदों की तादाद भी बढ़ती जा रही है। हमारे युवा पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव में आकर अपने विपरीत लिंगी के साथ मुक्त संबंधों को तवज्जो देकर अपना जीवन बर्बाद कर रहे हैं। ऐसे में उन्हें सही जीवन साथी नहीं मिल पाता और परिवार का

सहारा और समर्थन भी समाप्त हो जाता है, जिसके कारण ऐसे कई अवैध संबंधों की परिणीती हत्या या आत्महत्या के रूप में होती है।

### 3. शहरीकरण और आधुनिकीकरण का नैतिकता पर प्रभाव

वर्तमान भारतीय समाज में शहरीकरण और आधुनिकीकरण के कारण लोगों की जीवन शैली तीव्र गति से बदल रही है। दिल्ली और गाजियाबाद जैसे महानगरों में भारत के विभिन्न भागों से अनेक धर्म, भाषाओं और संस्कृतियों के लोग आकर बसते रहते हैं, जिसके परिणामस्वरूप इन महानगरों में जनसंख्या घनत्व और सांस्कृतिक विषमजातीयता में निरन्तर वृद्धि हो रही है। जिसके कारण विभिन्न सामाजिक वर्गों में परस्पर भेदभाव, प्रतिस्पर्धा और वैचारिक संघर्ष बढ़ रहा है। आधुनिकीकरण के वर्तमान दौर में परंपरागत नैतिक मूल्यों और मान्यताओं का महत्व कम होने से समाज में अंसतुलन उत्पन्न हो रहा है। सामाजिक सामंजस्य के अभाव में आपराधिक और असामाजिक गतिविधियों में निरंतर वृद्धि हो रही है। नगरीकरणा और आधुनिकीकरण का मानवीय संबंधों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। आधुनिक भारत में नगरों – महानगरों की मंहगी जीवनशैली, दिनोंदिन बढ़ती जरूरतों की पूर्ति और सुख–सुविधाओं से परिपूर्ण जीवन जीने की चाहत के कारण परिवारों में स्त्री एवं पुरुष दोनों समान रूम से धन कमाने के लिए कार्य करने लगे हैं। माता–पिता दोनों की अत्यधिक व्यस्तता के कारण उनके पास बच्चों की देखभाल के लिए समय का अभाव रहता है। इसका प्रभाव बच्चों के पालन–पोषण और उनके संस्कारों पर विशेष रूप से पड़ रहा है। आधुनिकता की चकाचौंध में युवक और युवतियाँ मादक द्रव्यों के आदी हो रहे हैं। भारत में स्कूलों – कॉलेजों से लेकर गली – नुक्कड़ के ठिकानों तक नशीले पदार्थों के व्यापारियों ने अपना जाल फैला रखा है। बच्चों और युवाओं का बड़ी संख्या में नशे की लत का शिकार होना आज की भ्रामक एवं संस्कार विहिन आधुनिकता का परिणाम है।

शहरों में भीड़–भाड़, अपराध और मलिन बस्तियों की संख्या और आकार बढ़ता जा रहा है। नगरीय स्लम निर्धन प्रवासियों के रहने के लिए एक अनिवार्य स्थान बन गया है। प्रवासी मजदूर बुनियादी सुविधाओं के अभावों वाले इन स्लमों में रहने को विवश हैं। शहरों में सम्पन्न लोगों की कोठियों और अपार्टमेन्ट के आसपास ही अधिकतर स्लम होते हैं। अमीरों की देखादेखी सन्पन्न बनने की चाहत के कारण स्लम के पुरुष, महिलाएं और बच्चे कई प्रकार की आपराधिक गतिविधियों और सामाजिक कुरीतियों के शिकार हो जाते हैं। इस प्रकार आधुनिकीकरण और शहरीकरण के कारण उत्पन्न हुई निर्धनता और असमानता से भी नैतिकता का स्तर गिर रहा है।

### 4. सोशल मीडिया का नैतिकता पर प्रभाव

वर्तमान में सोशल मीडिया का प्रयोग लोगों द्वारा काफी व्यापक स्तर पर किया जा रहा है। सोशल मीडिया जानकारी फैलाने और लोगों को जोड़ने का एक शक्तिशाली उपकरण है, लेकिन साथ ही यह भ्रम, बनावटीपन, तुलना और प्रतिस्पर्धा की संस्कृति को भी बढ़ावा दे रहा है। लोग मजबूत नैतिक मूल्यों को विकसित करने पर ध्यान केन्द्रित करने के बजाय, लाइक, फॉलोअर्स की संख्या बढ़ाने पर ध्यान केन्द्रित कर रहे हैं। युवा सोशल मीडिया, फिल्मों, टी. वी. धारावाहिकों और वेब सीरीज के प्रभाव में आकर जीवन के बारे में सही निर्णय नहीं ले पा रहे हैं। सोशल नेटवर्किंग साइट पर मित्रों और साथियों की तलाश करते–करते वह गलत व्यक्तियों की संगति में पहुँच जाते हैं। ऐसे हालात में दुर्भाग्यवश या तो वह अपराध की दुनियाँ से जुड़ जाते हैं अथवा ब्लैकमेलिंग के शिकार हो जाते हैं। अक्सर सोशल साइट से युवक और युवतियाँ अमान्य रिश्ते बना लेते हैं। वर्तमान समाज में एक बड़ा तबका उस वर्ग का है जो सोशल साइट्स के नशे की गिरफ्त में आकर ठगी और धोखाधड़ी का शिकार हो रहा है। फेसबुक, इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप जैसी सोशल साइट्स की लत से बच्चों और किशोरों के साथ–साथ बड़े लोग भी इससे नहीं बच पा रहे हैं। वीड़ियों और रील्स को वायरल करने के लिए लोग नैतिक मूल्यों की भी अवहेलना करके असभ्य, कामुक, अशिष्ट और अनुचित रील्स और वीड़ियो बना रहे हैं। सोशल मीडिया व इंटरनेट की वजह से बच्चों की स्कूल की पढ़ाई–लिखाई, व्यवहार, आदतें और नींद तक प्रभावित हो रही है। कॉमिक्स,

कंप्यूटर गेम्स, वीडियो गेम्स, फिल्मों, गानों और अन्य अनेक मनोरंजन की साइट्स पर बच्चे और बड़े सभी अपने जीवन का कीमती समय व्यर्थ कर रहे हैं।

कई बार सोशल मीडिया पर गलत सूचनाएँ प्रसारित की जाती हैं जिससे सामाजिक शांति, सौहार्द और भाईचारा प्रभावित होता है। सोशल मीडिया के अत्यधिक विस्तार से भ्रांतिपूर्ण, असत्य, हिंसात्मक और अनैतिकतापूर्ण सामग्री के वितरण का खतरा बहुत बढ़ गया है। इस प्रकार मीडिया और सोशल मीडिया के गलत उपयोग से समाज में नैतिकता के मानकों का ह्रास हो रहा है।

5. **धार्मिक मूल्यों में बदलाव**

भारत एक धर्म निरपेक्ष राष्ट्र है। भारत सभी धर्मों का सम्मान करता है। भारत में हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख, इसाई, जैन, बौद्ध, पारसी तथा कुछ अन्य धर्मों को मानने वाले लोग एक साथ रहते हैं, जिनके अपने–अपने लिखित धर्म ग्रंथ एवं धार्मिक संस्कार हैं। धर्म हमारे समाज का बहुत ही संवेदनशील पक्ष रहा है। धर्म का मुख्य उद्देश्य आत्म शांति, भक्ति भावना, दान–पुण्य, आत्म–शुद्धि, मानवता, नैतिकता और मोक्ष प्राप्ति होता है। वर्तमान समय में भारत के धर्मों की एक विशिष्ट समस्या यह है कि इनके मूर्त रूप या अर्थों को परिवर्तित कर दिया गया है। किसी भी धर्म में घृणा, हिंसा या अनिच्छुक लोगों पर अपना मत थोपने का समर्थन नहीं किया गया है। फिर भी हमारा समाज कई कारणों से धार्मिक हिंसा और घृणा का गवाह रहा है, जिसमें व्यक्तियों और समूहों दोनों ने भाग लिया है। आज धर्म का उपयोग सिर्फ मानसिक शांति पैदा करने के लिए नहीं किया जाता अपितु अन्य अनेक प्रकार की क्रियाओं के लिए भी किया जाता है जैसेकि राजनीति में सत्ता प्राप्ति करने, सांप्रदायिक तनाव पैदा करने, गलत तरीके से धर्मांतरण द्वारा अपने धर्म का संवर्धन, छल कपट, तंत्र विद्या, समाज में प्रभाव और पैसा प्राप्त करने के लिए धार्मिक संगठन और संप्रदाय बनाना इत्यादि। भारत में हिन्दू–मुस्लिम संघर्ष के साथ–साथ हिन्दू–सिक्ख और हिन्दू–ईसाई संघर्षों में भी वृद्धि हुई है, जोकि भारत के धर्म निरपेक्ष सामाजिक ढांचे, एकता तथा बन्धुत्व के लिए प्रमुख चुनौति बन रहे हैं।

धर्म का उपयोग ना सिर्फ राजनीतिक और साम्प्रदायिक उद्देश्यों के लिए किया जाता है अपितु धर्म का अन्य अनेक अनुचित कार्यों और छल–कपट के लिए प्रयोग करने की प्रवृति बढ़ती जा रही है। मानसिक अवसाद से ग्रस्त, शारीरिक रूप से अस्वस्थ एवं पीड़ित, आर्थिक तंगी से परेशान लोग अपनी मुश्किलों से छुटकारा पाने की लालसा में कपटी और ढोंगी धर्म गुरुओं और तांत्रिकों के जाल में फंसकर धोखाधड़ी के शिकार हो जाते हैं। वह अपनी समस्या से छुटकारा पाने के बजाय अपनी धन सम्पति भी गवा देते हैं। बहुत सी महिलाएँ तो अपनी अस्मत् तक गवा देती हैं। आर्थिक लालच देकर तथा डरा धमका कर निर्धन और कमजोर लोगों का बलात् धर्म परिवर्तन करा दिया जाता है। धार्मिक हिंसा के कारण लोगों को अपना घर–द्वार तक छोड़कर जाना पड़ जाता है। कभी–कभी धार्मिक कर्म कांडों में चोरी छुपे नर बलि, आत्म बालि अथवा शिशु बलि देने की खबरें अभी भी आ जाती हैं। धर्म से नाम पर पशुबलि भी दी जाती है।

कुछ लोग धर्म स्थलों की आड़ में अनैतिक और आपराधिक गतिविधियाँ चलाते हैं। भारत में कुछ धर्म गुरुओं और बाबाओं ने बहुत ख्याति प्राप्त कर ली है। वह अकूत संपत्ति के मालिक बने हैं। आधुनिक सुख सुविधाओं से युक्त उनके बड़े–बड़े आश्रम अथवा संस्थान हैं। उनके अनुयायियों और आश्रितों की लम्बी–चौड़ी फौज होती है। सिर्फ साधारण लोग ही नहीं बल्कि बड़े–बड़े नेता, उद्योगपति और हस्तियाँ भी इनके अनुयायी होते हैं। भारत में बहुत से धार्मिक संस्थानों पर अनैतिक और आपराधिक गतिविधियों के कारण कानूनी कार्यवाही भी की गई है। कुछ नामी गिरामी धर्मगुरु हत्या और बलात्कार जैसे अपराधों के लिए उम्रकैद की सजा काट रहे हैं। कई बार धर्मगुरुओं ने अपने अनुयायियों और असले के दम पर सरकार की सत्ता तक को चुनौति दी है। समस्याओं का निराकरण करने तथा सुखमय भविष्य प्राप्त करने के नाम पर लोगों की धार्मिक भावनाओं का लाभ उठाया जाता है। आज धर्म का उपयोग आध्यात्मिक, नैतिक और मानवीय मूल्यों के लिए कम हो रहा है तथा अपने स्वार्थी हितों के लिए अधिक हो रहा है।

6. **शैक्षणिक जीवन में नैतिकता का पतन**

हमारे शिक्षण संस्थान और शिक्षा प्रणाली वर्तमान समय में छात्रों को नैतिकता और नैतिक मूल्य प्रदान करने में विफल हो रहे हैं। शिक्षा प्राप्त करने वाले आधुनिक छात्र धन और शक्ति को सर्वोच्च सम्मान दे रहे हैं। छात्रों द्वारा व्यवसायिक और आर्थिक उपलब्धि को अधिक महत्त्व दिया जा रहा है। लोगों की बढ़ती महत्वकांक्षाएं और निजी शैक्षणिक संस्थानों का बढ़ता लालच, शिक्षा में नैतिक मूल्यों में गिरावट का एक प्रमुख कारण है। निजी शिक्षण संस्थानों में अंग्रेजी भाषा, गणित, विज्ञान और अन्य पेशेवर पाठ्यक्रमों पर अधिक जोर दिया जा रहा है। मानवीय मूल्यों और नैतिकता पर आधारित गतिविधियों को बहुत कम महत्व दिया जाता है। आदर्श विचारों की सभाएँ, साहित्यिक कार्यक्रम, सामाजिक समस्याओं पर चर्चा और अन्य सांस्कृतिक गतिविधियाँ गायब होती जा रही हैं। नैतिक मूल्यों का सम्मान घटता जा रहा है। छात्र सही और गलत, अच्छाई और बुराई के बीच भेद करने में विफल हो रहे हैं। नैतिकता के अभाव के कारण छात्रों में धूम्रपान, छेड़छाड़, कक्षा में दुर्व्यवहार, अध्यापकों का अपमान, नशीली दवाओं की लत, दुराचार और किशोर अपराध बढ़ रहे हैं। सामाजिक संरचना और लोगों की जीवन शैली में परिवर्तन के साथ छात्रों में आपराधिकता और असामाजिक व्यवहार का खतरनाक प्रतिशत बढ़ रहा है। सफलता, धन, शक्ति और प्रसिद्धि प्राप्त करने के लिए छात्र आसान तरीके अपना रहे हैं यहाँ तक कि वह गलत रास्ते भी अपना रहे हैं जैसे कि नकल करके पास होना, पैसों के बल पर दाखिला और डिग्रियां प्राप्त करना इत्यादि।

आज छोटे–छोटे स्कूली छात्रों में व्यसन, व्याभिचार, हिंसा, मदिरापान की प्रवृति बढ़ती जा रही है। हमारे समाज में छोटे–छोटे बच्चे चरित्रहीन हो रहे हैं। इसका प्रमुख कारण हमारी शिक्षा प्रणाली का स्वरूप बदल जाना है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में छोटे बच्चों को चरित्रवान और अच्छा इंसान बनाने के लिए नैतिक मूल्यों की शिक्षा देने का अभाव है। अभिभावक भी बच्चों को व्यवसायिक और प्रतियोगिता परिक्षाओं के लिए तैयार करने वाली गणित, विज्ञान, कंप्यूटर साइंस और सामान्य ज्ञान की पुस्तकों पर अधिक ध्यान देते हैं और ऐसी पुस्तकें देने की कोशिश नहीं करते जिससे बच्चे नैतिकता और शिष्टाचार को समझ सके।

7. **भारतीय राजनीति में नैतिक मूल्यों का ह्रास**

वर्तमान भारतीय राजनीति में भ्रष्टाचार एक मुख्य समस्या है, जिसने राजनीति में नैतिक मूल्यों को कमजोर किया है। कुछ नेताओं के भ्रष्टाचारपूर्ण आचरण और आपराधिक गतिविधियों में संलिप्तता के कारण लोगों का राजनीति के प्रति सम्मान और विश्वास कम होता जा रहा है। अधिकांश राजनीतिक दल चुनावों में अपराधियों को टिकट देकर प्रत्याशी बनाते हैं। राजनीतिक दलों द्वारा चुनावों में सत्ता प्राप्त करने के लिए अवैध तरीके भी अपनाये जाते हैं, जैसे कि मतदाताओं और विरोधियों को धमकी देना, रैलियों और मतदान केंद्रों पर दंगा और हिंसा करवाना, मतपेटियाँ लूटना, फर्जी वोट डलवाना इत्यादि। राजनीतिक दलों द्वारा मीडिया पर दबाव, सार्वजनिक धन का दुरुपयोग, मुफ्त सुविधाएँ देने की घोषणा करना, झूठे वादों वाले घोषणापत्र जारी करना, धर्म और जाति के आधार पर लोगों को उकसाना इत्यादि गलत कार्य किये जाते हैं। हमारी संसद में विधि निमार्ण पर चर्चा करने के बजाय शोर–शराबा और हंगामा अधिक होता है। जन–प्रतिनिधियों की खरीद–फरोख्त, दल–बदल, आज आम बात है। जाति, धर्म, क्षेत्र और संप्रदाय के आधार पर नई–नई पार्टियों का निमार्ण हो रहा है। एक ओर जहां आम नागरिक अपनी गाढ़ी कमाई का एक बड़ा हिस्सा सरकार को टैक्स के रूप में अदा करते हैं, वहीं दूसरी ओर राजनेता लोकधन से विश्व की सर्वोत्तम सुविधाओं का उपभोग करते हैं। एक तरफ जहाँ साधारण जनता अपनी दैनिक जरुरतों को पूरा करने के लिए कड़ी मेहनत करती है, वहीं दूसरी तरफ भ्रष्ट नेताओं के यहाँ छापेमारी में काले धन के अंबार पकड़े जाते हैं। यह सभी प्रवृतियाँ भारतीय राजनीति में नैतिक मूल्यों को प्रभावित कर रही हैं ।

8. **तकनीकी एवं प्रौद्योगिकीय विकास का नैतिकता पर प्रभाव**

आज का युग विज्ञान तथा प्रौद्योगिकीय विकास में विश्वास करता है। तकनीकी और प्रौद्योगिकीय विकास के फलस्वरुप भौगोलिक दूरिया सिमट गई हैं। फोन, कम्प्यूटर एवं इंटरनेट के माध्यम से लोग अपने कमरे

से ही पूरे विश्व में कहीं भी सम्पर्क और बात कर सकते हैं। इंटरनेट से प्राप्त ज्ञान पुस्तकीय ज्ञान से काफी आगे निकल चुका है। आधुनिक मशीनें, वाहन और अन्य अनेक प्रकार के उपकरण रिमोट अथवा रोबोट द्वारा संचालित किये जाते हैं। अत्याधुनिक संचार प्रौधोगिकियाँ, रेल, जहाज, एयरक्राफ्ट, स्पेसक्राफ्ट, सैटेलाइट, लैपटॉप, स्मार्ट फोन इत्यादि सभी तकनीकी विकास के प्रतीक हैं। तकनीकी विकास ने हमारी जीवनशैली और संस्कृति को बहुत प्रभावित किया है। इलैक्ट्रॉनिक गैजेट्स और मोबाइल ऐप्स ने शिक्षा और सीखने के तरीकों को बदल दिया है। आजकल बच्चे और युवा किताबों के ज्ञान से ज्यादा इन्टरनेट से ज्ञान बटोरना सही और आसान समझते हैं। कुछ भी बनाना या पकाना सीखना हो तो यूट्यूब का प्रयोग किया जा रहा है। मगर हम इस बात से अनजान हैं कि ऐसा करने से बच्चों और लोगों की स्वयं की रचनात्मक शक्ति प्रमावित हो रही है। लेखन कार्यों में मौलिकता भी कम हो रही है। आज के तकनीकी युग में व्यक्तियों का कार्य मशीनें कर रही हैं, जिसके परिणाम स्वरूप बेरोजगारी बढ़ रही है। रोजगार नहीं होने से कुछ लोग अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए अनैतिक कार्य करने के लिए भी विवश हो जाते हैं।

प्रौद्योगिकी विकास के नकारात्मक प्रभाव से बच्चों का जीवन भी अछूता नहीं है। कई बार मोबाइल की लत के कारण बच्चों द्वारा घातक कदम उठाये जाने की खबरे आती हैं। हताश और निराश लोगों द्वारा मोबाइल में वीडियो बना कर अथवा वीडियोकाल करके आत्महत्या करने की घटनायें भी सामने आती हैं। कंप्यूटर, स्मार्टफोन, टी. वी., लैपटॉप और टैबलेट पर बहुत अधिक समय बिताने से आँखों और स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव पड़ रहा है। सामाजिक मेलजोल में व्यक्तिगत संपर्क कम होता जा रहा है। बच्चों में धैर्य और बड़ों के प्रति सम्मान कम होता जा रहा है। शारीरिक गतिविधियाँ कम होती जा रही हैं। स्क्रीन पर सामान्य से अधिक समय देने के कारण बच्चों में सामाजिक और व्यवहार संबंधी समस्याएँ पैदा हो रही हैं। प्रौद्योगिकी के अत्यधिक उपयोग के नकारात्मक प्रभावों के प्रति जागरूक होना आवश्यक है।

आज के युग को डिजिटल युग कहा जाता है। इस डिजिटल युग में नैतिक मूल्यों का ह्रास भी डिजिटल होता जा रहा है। साइबर अपराध इसका सर्वोचित उदाहरण हो सकता है। अब किसी भी कम्प्यूटर नेटवर्क को कभी भी भेदा जा सकता है। इंटरनेट पर उपलब्ध जानकारी का दुरुपयोग किया जा सकता है। उदाहरण के लिए दिल्ली के एम्स अस्पताल में वर्ष 2022 और वर्ष 2023 में दो बार साइबर अटैक के मामले सामने आये थे। इसके कारण कई सर्वर बाधित हो गए थे। मरीजों को कई दिनों तक परेशानी का सामना करना पड़ा था। इसी तरह से देश में ऐसे और भी साइबर हमले किए जा सकते हैं, जिनका सामना करने के लिए हमारी सरकार या तंत्र तैयार ही नहीं हो। ए आई (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) के जरिये फेक वीडियों और फेक न्यूज फैलाकर सामाजिक शांति और राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरा पैदा किया जा सकता है।

सोशल मीडिया के शौकीन और अपनी निजता की परवाह न करने वाले लोग अपनी बहुत सी व्यक्तिगत जानकारियाँ इंटरनेट पर साझा करते रहते हैं। हैकर्स द्वारा उनके सार्वजनिक रूप से उपलब्ध डेटा को जनरेटिव ए आई टूल्स की मदद से बदल कर, आपत्तिजनक अथवा अश्लील बनाकर उन्हें ब्लैकमेल या परेशान करने के मामले सामने आते हैं। फिशिंग भी एक प्रकार का साइबर हमला है। यह तब होता है, जब कोई साइबर अपराधी या हैकर्स किसी को फर्जी ई–मेल, व्हाट्स एप संदेश या टेक्स्ट संदेश खोलने के लिए उकसाता है। जैसे ही वह व्यक्ति ऐसा करता है, उसकी गोपनीय जानकारियाँ या धन उस साइबर अपराधी या हैकर तक पहुँच जाता है। प्रौद्योगिकी का उपयोग आतंकवादी गतिविधियों के लिए भी किया जाता है। हमारे देश में तकनीक और प्रौद्योगिकी का बढ़ता दुरुपयोग एक बड़े खतरे की आहट है।

### 9. <u>पर्यावरण से संबंधित नैतिक मूल्यों का ह्रास</u>

हमारा जीवन चक्र व प्रकृति एक दूसरे से जुड़े हुए हैं, लेकिन हमने अपने सभी प्राकृतिक तत्वों जल, वायु और मिट्टी को प्रदूषित कर दिया है। पर्यावरण के प्रति नैतिक मूल्यों का पालन नहीं करने का खामियाजा आज हमें ही नहीं बल्कि आने वाली पीढ़ियों को भी भुगतना पड़ेगा। लोगों की कमाई का बड़ा हिस्सा उन

बीमारियों के उपचार पर खर्च हो रहा है जो पर्यावरण प्रदूषण के परिणामस्वरूप हो रही हैं। स्मॉग, असमय बाढ़, सूखा, भूस्खलन, पहाड़ों का दरकना, ग्लेशियरों का पिघलना, खिसकना और फटना इत्यादि प्रकृति और पर्यावरण के साथ छेड़छाड़ करने का ही दुष्परिणाम है। अंधाधुंध शहरीकरण के कारण खेत और मैदान गायब हो गए हैं। शहरों में जल निकासी की उचित व्यवस्था नहीं होने के कारण वर्षा ऋतु को शुरुआत होते ही लोगों को विनाशकारी बाढ़ का सामना करना पड़ता है। मानवजनित गतिविधियाँ ही बाढ़ के लिए जिम्मेदार हैं। मानव निर्मित अवरोध, तटबंधों, सुरंगों, नहरों और विकासात्मक गतिविधियों से संबंधित निर्माणों की वजह से नदियों के जल प्रवाह की क्षमता में कमी आ रही है। जिसके कारण प्रकृति द्वारा प्रदत्त बाढ़ का खौफ चल पड़ा है। देश में पहाड़ हो या मैदान हर ओर अकल्पनीय और अनियोजित विकास कार्य हो रहे हैं, जिसके दुष्परिणाम समय–समय पर प्राकृतिक आपदाओं के रूप में सामने आते रहते हैं। राजधानी दिल्ली में यमुना नदी और गाजियाबाद में हिन्डन नदी नाले में तब्दील हो चुकी हैं, दोनों ही नदियों के किनारे जो खुले मैदान होते थे, अब वहाँ केवल भवन और गैर कानूनी बस्तियाँ दिखती हैं। लगभग ऐसा ही हाल देश की अन्य नदियों का भी है।

तालाबों का भराव कर इमारतें बना ली गई हैं। सड़कें, हवाई अड्डे, क्लब, मॉल, ऑफिस, होटल इत्यादि बनाने के लिए पेड़ काटे जा रहे हैं। बढ़ते अपार्टमेंट कल्चर के कारण रियल एस्टेट का कारोबार चरम पर है। आधुनिक सुविधाओं से लैस बड़ी बड़ी टाऊनशिप बन रही हैं। नई कॉलोनियों की संख्या बढ़ती जा रही है, जिसके कारण वन क्षेत्र और खेती का दायरा तेजी से घट रहा है। पशु–पक्षियों के रहने और पालन पोषण के ठिकाने छिन रहे हैं। गौरैया चिड़ियाओं के प्राकृतिक घोसलों का स्थान अब कृत्रिम और सजावटी घोसलों ने ले लिया है। बाग और उद्यान मनोरंजन स्थलों में तब्दील हो रहे हैं। उद्यानों में अब लोगों को सेल्फी पॉइंट, ओपन जिम, खेल कोर्ट, रेस्त्रा, पक्के पैदल पथ जैसी सुविधाएँ देने के लिए हरित क्षेत्र को कम अथवा गायब किया जा रहा है। तेजी से बढ़ते बेतहाशा पक्के निर्माण से जल निकायों को नुकसान हुआ है तथा वर्षा जल का जमीनी रिसाव कम हो गया है । पानी के अत्यधिक उपयोग के कारण भूजल का स्तर दिनों–दिन नीचे जा रहा है। बरसात में सड़कें पानी से लबालब भर जाती हैं। सड़कों के बीच बने बड़े–बड़े गड्ढे, खुले मैनहोल, बिजली की टूटी तारें कई बार लोगों की मौत का कारण बन जाती हैं। कूड़ेदानों से निकली जहरीली गैसों और मच्छरों के पैदा होने के कारण लोग अनेक प्रकार की बीमारियों के शिकार हो जाते हैं।

वाहनों की लगातार बढ़ती संख्या के कारण राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र तथा अन्य शहरों में वायु प्रदूषण की स्थिति साल–दर–साल बिगड़ती जा रही है। सर्दियों के दौरान धुंध और वायु प्रदूषण के कारण लोगों के फेफड़े खराब हो रहे हैं। स्वच्छता के अभाव में पूरे साल मच्छरों का प्रकोप रहता है। हमारे देश में हर वर्ष अनगिनत लोगों की जानें पर्यावरणीय लापरवाही और प्राकृतिक आपदाओं के कारण चली जाती है, लेकिन फिर भी हम पर्यावरण से सम्बन्धित नैतिक मूल्यों का गंभीरतापूर्वक पालन नहीं करते। हम प्रकृति की देखभाल करने के ठीक विपरीत विकास के लिए जल, जमीन, जंगल, पहाड़ और पेड़–पौधे सभी का दोहन कर रहे हैं।

## नैतिकता के उत्थान हेतु सुझाव

समाज में नैतिकता के स्तर को ऊँचा उठाने का सर्वप्रथम उपाय है आत्मचिंतन और स्वयं को जागृत करना। हम सभी को चाहिए कि हम अपने बच्चों की परवरिश पर प्रारंभ से ही ध्यान दें और बच्चों को बचपन से ही नैतिक शिक्षा प्रदान करें। जीवन में ज्ञान–विज्ञान की शिक्षा के साथ–साथ नैतिकता का ज्ञान प्राप्त करना भी बहुत ही जरूरी है। हर बच्चे के शारीरिक और मानसिक विकास को बचपन से ही सुधारने एवं संवारने की जिम्मेदारी माता–पिता और शिक्षकों दोनों की समान रूप से है। सिर्फ बड़े और नामी–गिरामी स्कूल में दाखिला दिला देने भर से माता–पिता की जिम्मेदारी समाप्त नहीं हो जाती है।

आधुनिक काल में पारिवारिक और सामाजिक संबंधों की गरिमा को बनाये रखने के लिए प्राचीन पीढ़ी को नई पीढ़ी को अपनी परम्पराओं और संस्कारों के पालन के लिए प्रेरित करना आवश्यक है। जिसके लिए समय, स्नेह, सामंजस्य और संयम जरूरी है। सदैव पुरानी पीढ़ी ही नई पीढ़ी को संस्कारों का हस्तांतरण करती है इसीलिए जरूरी है कि पुरानी पीढ़ी स्वयं भी अपने आचरण में नैतिकता को महत्व दे और नई पीढ़ी को उचित मार्ग दर्शन से संभाले। ऐसा करके ही हम भावी समाज को नैतिक मूल्यों के साथ कायम रख सकते हैं। पाश्चात्य आधुनिकता की चकाचौंद में हमें अपनी संस्कृति, सभ्यता एवं संस्कारों को नहीं छोड़ना चाहिए। संस्कार, नैतिकता और शिष्टाचार एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित करना देश के हर नागरिक का धर्म और कर्तव्य है।

यह बेहद जरूरी है कि अभिभावक अपनी अगली पीढ़ी को हर रिश्ते की कद्र करना सिखाएँ। स्त्री–पुरुष के रिश्तों के बारे में भी बच्चों को यथासंभव संपूर्ण जानकारी माता–पिता स्वयं ही दे, ताकि जिज्ञासा में बच्चे अन्य स्त्रोतों से मिली गलत जानकारी के शिकार नहीं हो। युवा पीढ़ी को अपने हर तरह के संबंधों की जानकारी अपने माता–पिता को अवश्य देनी चाहिए, अगर कुछ गलत होता है तो परिवार का परामर्श और समर्थन आसानी से मिल जाता है। आजादी और आधुनिकता के नाम पर युवा वर्ग द्वारा परिवार की सहमति के बिना बनाए गए रिश्ते बेहद खतरनाक हो सकते हैं। आज की बढ़ती आधुनिकता आगे चलकर पूरे समाज के लिए अभिशाप बन सकती है।

सामाजिक स्तर के साथ–साथ राजनीतिक क्षेत्र को भी स्वच्छ करने के प्रयास किये जाने चाहिए। सर्वोच्च न्यायालय 2016 से अश्विनी कुमार उपाध्याय की जनहित याचिका में सांसदों और विधायकों के खिलाफ आपराधिक मामलों के शीघ्र निपटान की निगरानी कर रहा है। सांसदों व विधायकों के खिलाफ आपराधिक मुकदमों से जुड़े मामले में सुप्रीम कोर्ट की ओर से नियुक्त न्याय मित्र वरिष्ठ वकील विजय हंसारिया ने सुप्रीम कोर्ट में सौंपी अपनी 19वीं रिपोर्ट में सुझाव दिया है कि सजा होने पर सांसदों और विधायकों के चुनाव लड़ने में आजीवन प्रतिबंध लगना चाहिए। (स्त्रोतः अमर उजाला, नई दिल्ली, शुक्रवार, 15–09–2023)। मतदाता भी राजनीतिक भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने की अपनी शक्ति का प्रयोग कर सकते हैं। यदि मतदाता दागी उम्मीदवारों को वोट नहीं देंगे तो राजनीतिक दलों पर अपराधियों को चुनाव में उम्मीदवार नहीं बनाने का दवाब बन सकेगा।

प्रौद्योगिकी के अत्यधिक उपयोग के नकारात्मक प्रभावों को दूर करने के लिए सीमाएँ निर्धारित की जा सकती हैं। माता पिता अपने बच्चों के सोशल मीडिया उपयोग की निगरानी करें और इस बात से अवगत रहें कि वे किस प्रकार की वेबसाइटों पर जा रहे हैं तथा कौन से ऑनलाइन गेम खेल रहे हैं। अनुपयुक्त वेबसाइटों और ऐप्स को ब्लॉक करने के लिए कम्प्यूटर, स्मार्टफोन और टैबलेट पर अभिभावकीय नियंत्रण होना चाहिए। कम्प्यूटर और टी वी को एक सामान्य कमरे में रखने का प्रयास होना चाहिए ताकि बच्चों के प्रौद्योगिकी उपयोग की निगरानी हो सके। साइबर क्राइम के प्रति जनता को जागरूक रहना चाहिए तथा सरकार द्वारा भी कड़े रक्षात्मक एवं दंडात्मक उपाय किये जाने चाहिए।

अब समय आ गया है कि हम प्रकृति को लेकर सचेत हो जायें। जल, वायु और मिट्टी के प्रदूषण को रोकने के उपाय अपनाना शुरु करें। जल, जंगल, जमीन और पहाड़ों के दोहन को नियन्त्रित किया जाये ताकि वे विनाश का कारण नहीं बनें। हमें प्रकृति के प्रति आखे मूंदने के बजाय प्रकृति का बचाव शुरु कर देना चाहिए। प्रकृति के साथ तालमेल बिठा कर हरित विकास की प्रक्रिया को अपनाया जाना चाहिए। नागरिक, केंद्र सरकार, राज्य सरकार तथा स्थानीय निकाय सभी उत्तरदायित्व और जवाबदेही के साथ पर्यावरण से संबंधित नैतिक मूल्यों का पालन करें।

## निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से इस निष्कर्ष पर पहुँचते है कि आधुनिक भारतीय समाज के बदलते सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश में नैतिकता के ह्रास की समस्या उत्तरोत्तर बढ़ती ही जा रही है, जो संभवतः विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक, धार्मिक, राजनीतिक, तकनीकी और आर्थिक कारकों से प्रभावित हैं। वर्तमान समाज में नैतिकता का गिरता स्तर एक गंभीर सामाजिक समस्या का रूप धारण कर चुका है। अतः इस समस्या को समझने और इतके निराकरण के लिए एक बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है, जिसमें ''पारिवारिक और सामुदायिक प्रयास, शिक्षा तथा आधुनिक सामाजिक परिवर्तनों के प्रति सकारात्मक प्रतिबद्धता शामिल हो। नैतिकता का पालन करने से ही एक सौहार्दपूर्ण और अच्छे समाज का निमार्ण होता है। जिस समाज में लोग ऊँचे नैतिक मूल्यों से सम्पन्न होते हैं, वह सकारात्मक रूप से प्रगति करता है। इसके विपरीत जिस समाज में मूल्यों का ह्रास होता है, वह धीरे–धीरे ही सही लेकिन निश्चित रूप से पतित होता जाता है। एक सौहार्दपूर्ण समाज तथा एक मजबूत राष्ट्र के निर्माण के लिए नैतिक मूल्यों का उत्थान एवं पुनरुद्धार करना आवश्यक है। सभी क्षेत्रों में लोगों और संस्थाओ द्वारा नैतिक मूल्यों के पालन पर ही देश का सुखमय वर्तमान और खुशहाल भविष्य निर्भर करता है। अगर हम अपने भारतीय समाज के लोगों को परम सुखी करना चाहते हैं तो यह कार्य तरह–तरह की सुख–सुविधाओं, अत्याधुनिक वस्तुओं और व्यवस्थाओं से नहीं हो सकता। इसके लिए लोगों का बौद्धिक स्तर और विचारधारा का नैतिकतापूर्ण होना आवश्यक है।

## सन्दर्भ सूचि


- कोठारी, आर. (1970), "पोलिटिक्स इन इंडिया", ओरियन्ट लॉगमैन, नई दिल्ली, पृ. सं. 50–76।
- मिश्र, डॉ. के. के. (1980), ''आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन'', मीनाक्षी प्रकाशन, बेगम ब्रिज, मेरठ, पृ. सं. 5–8।
- राव, एम. एस. ए. (1990), ''अर्बन सोशियोलॉजी इन इंडिया'', ओरिएण्ट लांगमैन, नई दिल्ली।
- जैन, एस. (1996), ''भारत में परिवार, विवाह और नातेदारी'', रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, पाठ सं 2–7।
- गुप्ता, प्रो. एम. एल. एवं शर्मा, डॉ. डी. डी. (2000), ''भारतीय सामाजिक समस्याएं'', साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा, पृ. सं. 1–8, पृ. सं. 26–31, पृ. सं. 176–193, पृ. सं. 310–317।
- अवस्थी, डॉ. एन. एम. (2005–06), ''पर्यावरणीय अध्ययन'', लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, पृ. सं. 375।
- राजकिशोर. (2009), ''नैतिकता के द्वंद्व'', नैतिकता के नए सवाल, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, पृ. सं. 70–75।
- व्यास, डॉ. एस. एवं शर्मा, एस. डी. (2013), ''भारतीय समाज : मुद्दे एवं समस्याएं'', निखिल पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, आगरा, उत्तर प्रदेश।
- शैलेन्द्र, डॉ. वी. एवं शर्मा, एस. डी. (2013), ''भारतीय समाज : मुद्दें एवं समस्याएँ'', निखिल पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, आगरा, उत्तर प्रदेश।
- श्रीनिवासन, एम. एन. (2016), ''आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन'', राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., नई दिल्ली।
- सिंह, जे. पी. (2016), "आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन : 21वीं सदी में भारत", द्वितीय संस्करण, पी.एच.आई. लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, पृ. सं. 4–6, पृ. सं. 15–19।
- सिरस्वाल, डी. आर. (2017), ''भारतीय समाज में नैतिक मूल्यों की आवश्यकता'', रिसर्च गेट, 8(8), पृ. सं. 86–91, उपलब्ध :

https://www.researchgate.net/publication/337647728_bharatiya_samaja_mem_naitika_mulyom_ki_avasyakata ।

- सक्सेना, ए. (2017), ''शोध पत्र : उच्च शिक्षा में दर्शन और नैतिक मूल्य अनिवार्य'', उपलब्ध : http://akaksha11.blogspot.com/2017/12/blog-post.html?m=1 ।
- कुमार, डॉ. एस. (2018), ''शिक्षा में मानव मूल्य और व्यावसायिक नैतिकता : आवश्यकता और महत्व'', इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंटिफिक रिसर्च इन साइंस इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी, 4(9), पृ. सं. 643–648, उपलब्ध : https://ijsrset.com/paper/7953.pdf ।
- अग्रवाल, डॉ. जी. के. (2019), ''भारत में ग्रामीण एवं नगरीय समाज'', साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, पृ. सं. 233–251 ।
- देशबंधु. (2019), ''समाज का नैतिक पतन शिक्षा प्रणाली का दोष'', उपलब्ध : https://www.deshbandhu.co.in/vichar/moral-fall-of-society-blame-education-system-77864-2 ।
- राजपूत, डी. (2019), ''धर्म नैतिकता और राज्य'', शोधगंगा, उपलब्ध : https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/266598 ।
- राज, एम. (2022), ''नैतिकता और नैतिक मूल्य गायब हो गए हैं'', नॉर्थलाइन्स, उबलब्ध : https://thenorthlines-com.translate.goog/moral-and-ethical-values-have-gone-missing/?_x_tr_sl=en&_x_tr_tl=hi&_x_tr_hl=hi&_x_tr_pto=tc,sc ।
- मिश्रा, डॉ. जी., ''शोशिओ–कल्चरल इंफ्लूएन्सेस ऑन मोरल बिहेवीयर'', पृ. सं. 179–180, उबलब्ध : https://www.google.com/url?sa=t&source=web&rct=j&url=https://ijsw.tiss.edu/greenstone/collect/ijsw/archives/HASH196f/26996719.dir/doc.pdf&ved=2ahUKEwir79q377X9AhXo7XMBHcdWD0gQFnoECBYQAQ&usg=AOvVaw1iYE7RFx-Kuw4PEoV_PFta ।